30 इतिहास ने हमारी दुनिया को शक्ल दी है !

गुरमीत कौर और मरिअम साहिब





जब हम बच्चे थे तो हमारे बिलकुल निकट का परिवेश ही हमारी दुनिया थी। वे इतिहास के हमारे पाठ ही थे जिनके माध्यम से हमने उस दुनिया की पेचीदगियों को जानना–समझना शुरू किया जिसे हमने कभी देखा ही नहीं था। छोटी उम्र से ही हमें हमारी अपनी संस्कृति से भिन्न सांस्कृतिक, प्राचीन मिस्रवासियों से लेकर वाईकिंग्ज़ (स्कैन्डिनेवियाई समुद्री लड़ाके) तक, के बारे में पढ़ने को मिला। गानों और वीडियोज से लेकर पाठ्यपुस्तकों व पाठों तक, सीखने के तमाम उपकरणों की एक बृहत शृंखला के माध्यम से हमारे लिए इतिहास का अध्ययन एक प्रेरक व समग्र अनुभव बन गया था।

सम्भवतः इतिहास पढ़ने के लिए हमारी चाहत हमारी सोच का इतना बुनियादी हिस्सा नहीं होती यदि अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान हमें इतने बेहतरीन शिक्षक न मिले होते। बहुत से विद्यार्थियों के लिए इतिहास की कक्षाएँ उबाऊ, निर्जीव और एकदम थकाने वाली होती हैं। एक ऐसा घण्टा जो इतिहास के शिक्षक द्वारा दिए जाने वाले एक जैसे, दोहरावों वाले व्याख्यानों से भरा रहता है। परन्तु, स्कूल में इतिहास का हमारा अनुभव इससे एकदम अलग था; हमारे शिक्षकों ने जुनून से पढ़ाते हुए इस विषय को जीवन्त बना दिया था, और वे हम सबके भीतर भी ऐसी ही भावनाएँ भरने में कामयाब हो गए थे। और अपने शिक्षकों से लगातार शाबाशी पाते हुए हमें कक्षा में और ज्यादा से ज्यादा भागीदारी करने के लिए प्रेरणा मिलती थी।

हमारी कक्षा का वातावरण ऐसा नहीं था जहाँ हम सिर्फ नई विषय सामग्री पढ़ते थे, बल्कि वह ऐसी जगह थी जहाँ हम अपने दृष्टिकोणों पर सवाल खड़े करके, उन्हें चुनौती देकर उनका पुनर्आकलन करते थे। हमारे शिक्षकों और साथियों द्वारा मिलकर जो उन्मुक्त वातावरण बनाया गया था उससे हमें विषय–प्रसंगों पर खुलकर काम करने का आत्मविश्वास मिलता था। जिस चीज का हमें सबसे अधिक इन्तजार होता था तथा जिसमें हमें सबसे ज्यादा मजा आता था वह था कक्षा में होने वाली बहसों में बढ़–चढ़कर भाग लेना व दृढ़तापूर्वक उस बात को कहना जिस पर हमें विश्वास होता था। हमारी बातों व विचारों को टालने या खारिज करने के बजाय जिस ढंग से हमारे शिक्षक बहसों के दौरान हमारे दृष्टिकोणों को चुनौती देते थे उससे प्रेरित होकर हम अपने मतों के समर्थन में और साक्ष्यों की खोज करते थे। हम बहुत भाग्यशाली थे जो हमारी इतिहास की कक्षा में हमें ऐसे साथी मिले जिन्हें इस विषय के प्रति उतना ही जुनून था जितना कि हमें। हमें एक–दूसरे से बात करने, चर्चा करने में बहुत मजा आता था, और एक दूसरे के साथ तर्क–वितर्क करने से हमें मजबूती से अपनी बात कहना सीखने में मदद मिली। हमारी बड़ी जीवन्त यादें हैं कि किस प्रकार हम हमेशा कक्षा में उस दिन के विषय–प्रसंग को लेकर बहस करने में तल्लीन हो जाते थे बजाय कि अस्थिर चित्त से अपने पैंसिल बॉक्स के साथ कोई फिजूल हरकतें करने के – जो कि बाकी विषयों की कक्षाओं में आम बात होती थी। अपने आप को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की आकांक्षा और क्षमता ऐसी बातें हैं जो हमेशा हमारे साथ रही हैं। अब हमें अपने सामाजिक व राजनैतिक ख्यालों को स्पष्टता से सामने रख पाने का, और साक्ष्यों पर आधारित तर्क निर्मित कर पाने का पूरा आत्मविश्वास रहता है।

हो सकता है कि कई लोगों के लिए यह समझ पाना कठिन हो कि इतिहास जैसा सामाजिक विज्ञान का कोई विषय पढ़ने से दुनिया के बारे में किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण किस प्रकार प्रभावित हो सकता है। इतिहास जैसे सामाजिक विज्ञान के अध्ययन ने हमें किसी भी संस्था के मंतव्य (एजेण्डे) पर तथा इसके चलते उनके द्वारा बाँटी जाने वाली चुनिन्दा जानकारी पर सवाल खड़े करना सिखाया है। उदाहरण के लिए, द्वितीय विश्वयुद्ध के बारे में पढ़ते वक्त, हमें यह देखने को मिला कि किस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने लोगों का मनोबल कायम रखने के लिए अपने मत के प्रचार के लिए अभियान चलाए, जबकि खबरों और विचारों के बाकी स्रोतों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। हम आज के दौर में, अपने सन्दर्भ में भी किसी न किसी मत–विशेष को प्रचारित करने के या उसे प्रतिबन्धित करने के उदाहरण अक्सर देखते हैं – जो कुछ भी हम देखते हैं वह सब इस तरह से तैयार किया जाता है कि हम किसी न किसी ढंग से प्रभावित हों। इस प्रकार, आज के इस दौर में संचार–माध्यमों का उपभोक्ता होने के नाते, हमारे लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि किसी भी स्रोत पर बिना सोचे समझे आँख मूँदकर भरोसा करने से पहले हम उसके मंतव्य को समझें। उदाहरण के लिए, आम चुनावों के दौरान वामपन्थी विचारधारा वाले व दक्षिणपन्थी विचारधारा वाले, दोनों तरह के अखबारों में छपे लेखों को पढ़ने पर हमें यह समझ में आया कि किस तरह राजनैतिक एजेंडे चुनाव का वर्णन करने के ढंग को प्रभावित करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, हम इस बारे में

जानकारी पर आधारित समझदारी भरे निर्णय ले सके कि हमें किसका समर्थन करना चाहिए और क्यों।

> *इतिहास जैसे सामाजिक विज्ञान के अध्ययन ने हमें किसी भी संस्था के मंतव्य (एजेंडे) पर तथा इसके चलते उनके द्वारा बाँटी जाने वाली चुनिन्दा जानकारी पर सवाल खड़े करना सिखाया है।*

हालाँकि, शुरुआती वर्षों में हमारी इतिहास की शिक्षा का केन्द्रबिन्दु ब्रिटेन हुआ करता था, परन्तु बाद के वर्षों में हमने यूरोपेत्तर इतिहास भी पढ़ा, जैसे कि वियतनाम युद्ध, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और आधुनिक अमरीका का इतिहास। इस सबके माध्यम से हमें सत्ता की राजनीति और उसके अभिव्यक्त होने के विभिन्न प्रकारों – चाहे औपनिवेशीकरण के माध्यम से हो, या अलगाव के माध्यम से या फिर हिंसा के द्वारा – को जानने–परखने का मौका मिला। इन वैश्विक घटनाओं की पेचीदगियों के बारे में पढ़ने से हमें आज की दुनिया की राजनैतिक परिस्थितियों व संघर्षों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। एक प्रसंग जिसने हमें खास तौर पर बहुत प्रभावित किया वह था 1930 के दशक में गाँधी द्वारा नमक सत्याग्रह के लिए की गई सामूहिक दाण्डी पदयात्रा। हालाँकि गाँधी ने इस पदयात्रा का नेतृत्व किया था लेकिन वह लोगों द्वारा उसे मिले समर्थन के कारण सफल हुई। इससे हमें यह समझ में आया कि बदलाव एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के कारण नहीं होता है, बदलाव लाखों लोगों के कारण हो पाता है। नमक सत्याग्रह में शामिल जनसैलाबों से लेकर मार्टिन लूथर किंग के वॉशिंगटन मार्च को समर्थन देने वाले लाखों लोगों तक, हमने इतिहास को सिर्फ नेताओं के बारे में होने वाले अध्ययन के बजाय लोगों के अध्ययन के रूप में तथा उन्होंने कैसा आचरण करना पसन्द किया, इसके अध्ययन के रूप में देखना शुरू किया।

हमें यह बात साफ हो गई कि इतिहास सिर्फ कक्षा के भीतर सीमित रहने वाला विषय न होकर हमारी अपनी जिन्दगियों में प्रकट रूप से मौजूद है। इसे एक ऐसे शहर में, जहाँ अध्ययन के स्रोत व साधन बहुत सरलता से उपलब्ध रहते हैं, पढ़ने से मिले लाभों ने भूले बिसरे अतीत में जान फूँक दी। समसामयिक घटनाक्रमों से, तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों व संग्रहालयों में स्थित प्राचीन शिल्पकृतियों से परिचित होने से इतिहास का हमारा अनुभव बहुत बढ़िया हो गया था। हम अपने पूरे स्कूली दौर में ढेर सारी अध्ययन–यात्राओं पर गए। हमें अभी भी याद है जब हमने हैनरी अष्टम द्वारा सैकड़ों साल पहले इस्तेमाल की गई लिखने की मेज देखी थी। हमें ऐसा लगा था मानों हम प्रदर्शनी में उसे देख रहे थे और वह अपनी मेज पर बैठा लिख रहा था, जबकि हम दर्शनार्थी इतिहास के रेशों को मिलाकर उसकी कहानी बनाने का प्रयास कर रहे थे।

भिन्न–भिन्न अध्ययन उपकरणों के मिश्रण ने इतिहास को हमारे लिए बेहद आकर्षक और दिलचस्प बना दिया है। कक्षा के भीतर, विषय को लेकर हमारे उत्साह को और बढ़ाने में हमारे शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि थी जिन्होंने हमें और शोध करने की तथा और पढ़ते रहने की प्रेरणा दी, जबकि कक्षा के बाहर मौजूद स्रोतों की बहुतायत से हमें समसामयिक घटनाओं को लेकर अपना दृष्टिकोण तय करने में मदद मिली। लेकिन, हमें फिर भी यह पता है कि अभी भी इतिहास का हमारा ज्ञान हमारे चारों ओर की दुनिया के बारे में हमें सुविज्ञ दृष्टिकोण दे पाने के लिए पर्याप्त से भी बहुत कम है। अपने इतिहास–ज्ञान को लेकर यह समझ होना भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका मतलब यह हुआ कि हम हमेशा ही और ज्यादा जान पाने व सीख पाने के तरीकों को ढूँढ़ने की तलाश में रहते हैं ताकि हमें अपने चारों ओर की दुनिया की एक ज्यादा समग्र तस्वीर मिल सके। चाहे ऐतिहासिक लम्हों के दौरान जीने की बात हो या भविष्य में होने वाले बदलावों के बारे में सोचना हो, इस विषय के हमारे अनुभव ने हमारे नजरिए और सोच पर अपनी स्पष्ट छाप छोड़ी है। सोचने पर समझ में आता है कि इस पेचीदा सामाजिक विज्ञान के अध्ययन ने हमारे विचारों और हमारे आचरणों, दोनों को प्रभावित किया है और अभी भी कर रहा है।

गुरमीत कौर *ने अपनी पूरी शिक्षा के दौरान इतिहास की पढ़ाई का बहुत आनन्द लिया है, और हाल ही में उन्होंने इतिहास में अपना ए–लेवल पूरा किया है। इस लेख के लिखे जाने यानी सितम्बर 2010 तक वे लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स में इतिहास पढ़ने की योजना बना रही थीं। उन्हें कविताओं में तथा साहित्य पढ़ने में बहुत मजा आता है। उनसे इस* gurmeet-kaur@hotmail.co.uk *ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

मरिअम साहिब *ने जीसीएसई स्तर तक इतिहास की पढ़ाई की, पर वे लगातार राजनैतिक और ऐतिहासिक चर्चा में भाग लेती रहती हैं। इस लेख के लिखे जाने यानी सितम्बर 2010 तक वे सिटी यूनिवर्सिटी में ऑप्टोमैट्री पढ़ने की योजना बना रही थीं। उन्हें खेलों में, खासतौर पर फुटबॉल खेलने में, बहुत मजा आता है। उनसे इस* mariam_sahib@hotmail.com *ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*